षष्टम्

अध्याय

सारांश, सुझाव एवं शैक्षिक निहितार्थ

षष्टम – अध्याय
सारांश, सुझाव एवं शैक्षिक निहितार्थ

6.1.0 भूमिका

पंचम अध्याय में निष्कर्षों की विवेचना की गई थी इस अध्याय में सारांश, सुझाव एवं शैक्षिक निहितार्थ प्रस्तुत किये गये है।

प्रस्तुत अध्याय में इस शोध के प्राप्त निष्कर्ष प्रस्तुत किये गये हैं वि लेषण तथा व्याख्या के बाद शोधकर्ता के समक्ष मूल प्र न होता है। निष्कर्ष तथा सुझाव प्रस्तुत करना इसके लिये एक बार पुनः उद्दे य तथा परिकल्पनाओं पर दृष्टिपात् करना होता है। प्रत्येक शोध कार्य जब प्रारम्भ किया जाता है तो उसके उद्दे य निर्धारित किये जाते हैं। उन उद्दे यों के अनुसार ही परिकल्पनाऐं निर्मित की जाती हैं इन्हीं उद्दे यों तथा परिकल्पनाओं के आधार पर वि लेषण किसी भी शोधकर्ता के मस्तिष्क में कार्य कर रहा होता है और इससे वह अपने आपको पृथक नहीं कर पाता है।

प्रस्तुत शोध कार्य में भी कुछ उद्दे य लिये गये थे और उन्हीं उद्दे यों की पूर्ति हेतु वि लेषण किया गया जिसके विषय में इससे पूर्व अध्याय में विवरण प्रस्तुत किया जा चुका है।

प्रत्येक शोध कार्य में तथ्यों के वि लेषण तथा व्याख्या के उपरान्त यह दृष्टिपात् किया कि पूर्व में जो उद्दे य व परिकल्पनायें नि चित की गई थीं उनका अंतिम परिणाम क्या रहा तथा क्या वे परिकल्पनायें स्वीकृत की गयीं या अस्वीकृत। जो परिकल्पनाऐं अस्वीकृत की गईं। वे क्यों की गईं? इन सभी तथ्यों अथवा प्र नों को जानने के लिये उद्दे यों अथवा परिकल्पनाओं का अवलोकन किया जाता है। यहां प्रत्येक उद्दे य व परिकल्पना पृथक–पृथक रूप से सुनियोजित ढंग से प्रस्तुत किया गया है।

6.2.0 समस्या कथन

कक्षा 6 के भोपाल मदरसों के विद्यार्थियों की भाषा और सृजनात्मकता की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन

6.3.0 चरों की संक्रियात्मक परिभाषा

6.3.1 मदरसा बोर्ड

मदरसा शिक्षा के विकास एवं शैक्षिक रूप से पिछड़े अल्पसंख्यकों में शिक्षा के लोक–व्यापीकरण के तहत केन्द्र प्रवर्तित मदरसा आधुनिकरण योजना के प्रभावी क्रियान्वयन की दृष्टि से मध्यप्रदेश सरकार, स्कूल शिक्षा विभाग द्वारा 21 दिसम्बर 1998 को विधानसभा में अधिनियम पारित कर मध्यप्रदेश मदरसा बोर्ड का गठन किया गया।

6.3.2 सृजनात्मकता

"सृजनात्मकता वह गुण है। जो नवीन तथा वांछित वस्तु के उत्पादन की और आकृष्ट करें। यह नवीन उत्पादन संपूर्ण समाज अथवा केवल उत्पादक व्यक्ति के लिए नवीन हो सकता है।"

डीहान तथा हेविंगहर्स्ट

"कोई भी क्रिया सृजनात्मक है। जिसका तत्काल समाधान प्राप्त हो जाए, क्योंकि इस प्रकार का हल विचारक के लिए सदैव नवीनता लिए हुए होता है।"

थर्स्टन

"सृजनात्मक चिंतन रिक्तताओं, त्रुटियों तथा अप्राप्त एवं अलभ्य तथ्यों को समझने, उनके संबंध में धारणाऐं बनाने तथा अनुमान लगाने, धारणाओं का परीक्षण करने, परिणामों को अन्य तक पहुँचाने तथा धारणाओं को पुर्नपरीक्षण करके उनमें सुधार करने की प्रक्रिया है।"

6.4.0 उद्देश्य

1.6.1 विद्यार्थियों की भाषा योग्यताओं को जानने का अध्ययन करना।

1.6.2 विद्यार्थियों की भाषागत सृजनात्मकता का अध्ययन करना।

1.6.3 विद्यार्थियों की भाषा योग्यता एवं सृजनात्मकता के मध्य सह–संबंध का अध्ययन करना।

6.5.0 परिसीमन

- केवल भोपाल जिले के मदरसों की कक्षा 6 के विद्यार्थियों तक सीमित किया गया है।
- शोधकर्ता द्वारा शोधकार्य को केवल 100 विद्यार्थियों तक सीमित किया गया है।
- शोधकार्य हेतु विद्यार्थियों की भाषागत उर्दू उपलब्धि एवं भाषागत सृजनात्मकता तक सीमित किया गया है।

6.6.0 संबंधित शोध साहित्य का पुनरावलोकन

सृजनात्मकता से संबंधित अध्ययन

जहुरिया, रीटा (1988), लेसवेरने, एम0 आर (1995), सिंह, ओ.पी. (1982) हुमने, संघमित्रा – (2006), सेमवाल, अर्चना (2007), जायसवाल, शुक्ला (2009), शर्मा, (2009), पेसवानी, रितु (2011).

शैक्षिक उपलब्धि से संबंधित अध्ययन

जैन आर, अरोरा (1995), चौहान ए.एस. (1996), आसिफ अज़रा (1996), कपूर मनोज (1998), अनीस मोहम्मद (2001), रघुवंशी माया (2004), जैन संध्या (2011), कौसर सालेहा (2012).

6.7.0 परिकल्पनाएँ

6.7.1 विद्यार्थियों की भाषा योग्यताओं को जानने के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।

67.2 विद्यार्थियों की भाषागत सृजनात्मकता के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।

6.7.3 विद्यार्थियों की भाषा योग्यता एवं सृजनात्मकता के मध्य सार्थक सह–संबंध नहीं है।

6.8.0 न्यादर्श

न्यादर्श के रूप में शोधकर्ता द्वारा भोपाल शहर के मदरसों से 100 विद्यार्थियों का चयन रेडम विधि द्वारा किया गया।

6.9.0 उपकरण

सृजनात्मक चिन्तन –

विद्यार्थियों की सृजनात्मक चिन्तन के लिए डॉ. बाकर मेहदी द्वारा निर्मित एवं मानकीकृत परीक्षण अलीगढ़ा का प्रयोग किया गया है।

भारत में डॉ. बाकर मेंहदी ने सृजनात्मकता के अनुमाप तय किये है। डॉ. मेंहदी के परीक्षण टॉरेन्स के परीक्षणों के समान डॉ. बाकर मेंहदी के परीक्षण दो प्रकार के है। शाब्दिक एवं अशाब्दिक प्रस्तुत शोधकार्य में सृजनात्मक चिन्तन का अशाब्दिक परीक्षण का उपयोग किया गया है। इस परीक्षण में तीन उप

शैक्षिक उपलब्धि –

यदि समस्त शैक्षिक अवधारणाओं को शैक्षिक उपलब्धि के अर्थ में सम्मिलित माना जाय तो इस दृष्टि से सामान्य एवं व्यापक अर्थ में कोई भी व्यवहारिक परिवर्तन जो शिक्षा के द्वारा प्राप्त हो उसे भावी परिस्थितियों के साथ समायोजन करने में सक्षम बना सके शैक्षिक उपलब्धि कहलाता है।

6.10.0 प्रदत्त संकलन की विधि

प्रदत्त संकलन के लिए संबंधित मदरसा के प्राचार्य महोदय से अनुमति प्राप्त करने के पश्चात् विद्यार्थियों को उपकरण प्रशासित करने के लिए मानसिक रूप से तैयार कर उद्देश्य से परिचित कराया गया और प्रपत्र भरने संबंधी निर्देश दिये गये एवं प्राप्तांकों की गोपनीयता बनाए रखने का विश्वास दिया गया, इसके पश्चात् विद्यार्थियों का पूर्व परीक्षण लेकर प्रदत्तों का संकलन किया गया है। उसके पश्चात छात्र–छात्राओं को सात दिन तक सात स्वयं निर्मित एवं डॉ. बाकर मेहदी निर्मित एवं मानकीकृत परीक्षण लिया गया है। इस प्रकार प्रदत्त संकलन का कार्य पूर्ण किया गया है।

6.11.0 सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रस्तुत शोध में संकलित किये गये प्रदत्तों का विश्लेषण करने के लिए वर्णनात्मक सांख्यिकीय के लिए मध्यमान, माध्यिका एवं मानक विचलन का उपयोग किया गया है। सांख्यिकीय के लिए 't' परीक्षण एवं सह–संबंध का उपयोग किया गया है।

6.12.0 प्रमुख सम्प्राप्तियाँ एवं निष्कर्ष

उद्देश्य क्रं. 1 विद्यार्थियों की भाषा योग्यताओं को जानने का अध्ययन करना।

परिकल्पना क्रं. 1 विद्यार्थियों की भाषा योग्यताओं को जानने के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।

निष्कर्ष –

- t का गणना द्वारा प्राप्त मान 2.500 पाया गया
- 0.05 स्तर पर सार्थक नही हैं
- शून्य परिकल्पना निरस्त नहीं की जाती।

उद्देश्य क्रं. 2 विद्यार्थियों की भाषागत सृजनात्मकता का अध्ययन करना।

परिकल्पना क्रं. 2 विद्यार्थियों की भाषागत सृजनात्मकता के मध्यमानों में सार्थक अंतर नहीं है।

निष्कर्ष –

- t का गणना द्वारा प्राप्त मान 2.630 पाया गया
- 0.05 स्तर पर सार्थक नही हैं
- शून्य परिकल्पना निरस्त नहीं की जाती।

उद्देश्य क्रं. 3 विद्यार्थियों की भाषा योग्यता एवं सृजनात्मकता के मध्य सह–संबंध का अध्ययन करना।

परिकल्पना क्रं. 3 विद्यार्थियों की भाषा योग्यता एवं सृजनात्मकता के मध्य सार्थक सह–संबंध नहीं है।

निष्कर्ष –

- t का गणना द्वारा प्राप्त मान 0.0196 पाया गया
- 0.05 स्तर पर सार्थक सह–संबंध नही हैं
- शून्य परिकल्पना निरस्त नहीं की जाती।

6.13.0 भावी शोध अध्ययन हेतु सुझाव

प्रस्तुत अध्ययन में क्षेत्र, समय एवं साधनों की सीमा को देखते हुए भोपाल जिले तक ही सीमित रखा गया है। यदि यह अध्ययन प्रदेश या राष्ट्रीय स्तर पर किया जाए तो परिणाम अधिक व्यापक, यर्थात और विश्वसनीय एवं वैध होगे। प्रत्ययों का विस्तार से अध्ययन किया जाऐ तो अनेक नवीन तथ्य भी सामने आ सकते है इसलिए सुझाव दिया जाता है

आगामी शोधकर्ता को निम्नलिखित पहलूओं को ध्यान में रखकर शोधकार्य कर सकते है।

- यह शोधकार्य छोटे स्तर पर किया गया है। इसमें केवल भोपाल जिले के मदरसा के विद्यार्थियों को न्यादर्श के रूप में चुना गया है। इस अध्ययन को विद्यार्थियों के विभिन्न स्तर पर भी किया जा सकता है।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भाषागत व व्यक्तिव को लेकर शोधकार्य किया जा सकता है।
- उच्चतर माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की भावनात्मक बुद्धि व समयोजन को लेकर शोधकार्य किया जा सकता है।
- माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की अन्य भाषा व आंकाक्षा स्तर को लेकर शोधकार्य किया जा सकता है।
- विभिन्न स्तर पर विद्यार्थियों की सृजनात्मकता का बाल अपराध को लेकर शोधकार्य किया जा सकता है।
- विभिन्न स्तर पर विद्यार्थियों की भावानात्मक बुद्धि व सृजनात्मकता को लेकर शोधकार्य किया जा सकता है।
- विभिन्न स्तर पर विद्यार्थियों की भावानात्मक बुद्धि व अधिगम अथवा मनोवृत्ति को लेकर शोधकार्य किया जा सकता है।
- हाई स्कूल स्तर तथा उच्च शिक्षा स्तर पर भी अध्ययन की अति आवश्यकता है।
- विभिन्न औद्योगिक क्षेत्र एवं कार्यलयों में कार्यरत कर्मचारियों को लेकर भी इस प्रकार का शोध कार्य किया जा सकता है।
- आर्थिक और मानसिक रूप से पिछडे हुए परिवारो ने बालिकाओं तथा बालकों के पालनपोषण में अंतर के कारण उत्पन्न सृजनात्मकता का अध्ययन किया जा सकता है।

- व्यापारिक तथा व्यवसायिक प्रतिस्पर्धा के कारण सृजनात्मकता को भी शोधकार्य में सम्मिलित किया जा सकता है।

6.14.0 शैक्षिक निहितार्थ

- मदरसा/विद्यालय व्यवस्थापकों एवं शाला प्रधान को अपने विद्यालय में समय–समय पर खेल–कूद, सांस्कृतिक कार्यक्रम, भाषण, वाद–विवाद आदि कार्यक्रमों का आयोजन करना चाहिए ताकि विद्यार्थियों के व्यक्तित्व नेतत्व क्षमता व सृजनात्मकता/भाषा का समुचित विकास हो सके।
- व्यक्तित्व के घटकों के आधार पर विद्यार्थी द्वारा स्वयं की पहचान कर अपने व्यक्तित्व का विकास करने हेतु शिक्षक द्वारा मार्गदर्शन दिये जाने हेतु यह शोध उपयोगी होगा।
- विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के गुणों के अनुसार शिक्षकों द्वारा समय–समय पर अभिभावकों को परामर्श देकर उनका निर्देशन करने हेतु यह शोध उपयोगी होगा।
- अध्यापकों को अपने अध्यापन कार्य के साथ–साथ व्यक्तित्व के घटकों जैसे – निडर, साहसी, आत्मविश्वास, संकोची, स्वावलम्बी, ययार्थवादी, डरपोक, शंकालु, दूरदर्शी, गम्भीर, कठोर, मृदुभाषी आदि गुणों के आधार पर विद्यार्थी में सृजनात्मकता, नेतृत्व क्षमता व अन्य व्यक्तित्व के गुणों का विकास कर सकते हैं।
- मदरसा/विद्यालय की समय सारणी एवं उनके समस्त कार्यक्रमों का रूप इस प्रकार होना चाहिए कि छात्र–छात्राओं का शैक्षिक विकास होने के साथ–साथ उनका व्यक्तित्व का विकास संभव हो सके, जो शिक्षा का मुख्य उद्देश्य है।

- विद्यालयीन छात्र–छात्राओं के व्यक्तित्व का सूक्ष्म अध्ययन करके उनके समस्त अति आवश्यक क्रियाकलापों व कार्यो पर सूक्ष्म तरीके से नज़र रखकर उनका यथासमय अवलोकन करके उनके व्यक्तित्व के गुणों को उच्च स्तर का बनाया जा सकता है।

उपसंहार

प्रस्तुत अध्याय मे अनुसंधान के प्रत्येक अध्याय का संक्षेप मे विवरण दिया गया है, इस अध्याय में परिकल्पनाओं के परिणामों का संक्षेपीकरण देते हुए प्राप्त निष्कर्षों को बताया व निष्कर्षों के आधार पर प्रस्तुत लघुशोध प्रबंध के शैक्षिक निहितार्थ पर प्रकाश डाला गया है तथा भावी शोध के सुझावों को प्रस्तुत किया गया है।

=======***=======